अध्याय 17: टोपी शुक्ला

विषय-सूची

1 प्रश्नावली · 13 प्रश्न

प्रश्नावली 3.1	बोध-प्रश्न	13 प्रश्न

प्रश्नावली 3.1 — बोध-प्रश्न

प्रश्न 1

इफ़्फ़न टोपी शुक्ला की कहानी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा किस तरह से है?

हल

इफ़्फ़न टोपी का पहला और सच्चा दोस्त था। दोनों के बीच ऐसा अटूट संबंध था कि एक के बिना दूसरा अधूरा और बेमानी था।

लेखक स्पष्ट करता है — 'टोपी के बिना इफ़्फ़न और इफ़्फ़न के बिना टोपी न केवल यह कि अधूरे हैं बल्कि बेमानी हैं।'

इफ़्फ़न की दादी और उनकी पूरबी भाषा ने टोपी को वह प्यार और अपनापन दिया जो उसे अपने घर में नहीं मिला था।

इफ़्फ़न के जाने के बाद टोपी और अकेला हो गया — यह घटना उसकी भावात्मक दशा को निर्धारित करती है।

इस प्रकार इफ़्फ़न का चरित्र कहानी की धुरी है — वह कहानी में जगह-जगह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उपस्थित रहता है।

उत्तर: इफ़्फ़न टोपी का पहला सच्चा दोस्त था। दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे और बेमानी थे। इफ़्फ़न की दादी ने टोपी को अपनापन दिया और इफ़्फ़न के जाने के बाद टोपी पूरी तरह अकेला हो गया — इसीलिए वह कहानी का अटूट हिस्सा है।

प्रश्न 2

इफ़्फ़न की दादी अपने पीहर क्यों जाना चाहती थीं?

हल

इफ़्फ़न की दादी एक जमींदार की बेटी थीं। वे पूरब की रहने वाली थीं और नौ-दस साल की उम्र में ब्याहकर लखनऊ आई थीं।

ससुराल में उनकी आत्मा सदा बेचैन रही। मौलवी के घर होने के कारण वहाँ गाना-बजाना, पूरबी खान-पान और अपनी मातृभाषा — कुछ भी उन्हें नसीब नहीं हुआ।

मायके में उन्हें वह दही मिलता था जो घी पिलाई हुई काली हाँडियों में आता था, जिसे वे लपड़-शपड़ जी भरकर खातीं।

उनकी अपनी भाषा (पूरबी) केवल पीहर में समझी जाती थी — 'इस भाषा के सिवा इधर-उधर कोई ऐसा नहीं था जो उनके दिल की बात समझता।'

मरते वक्त भी उन्होंने कहा — 'हमरे घर भेज दिहो' — क्योंकि वही उनकी आत्मा का असली घर था।

उत्तर: इफ़्फ़न की दादी अपने पीहर इसलिए जाना चाहती थीं क्योंकि ससुराल में उनकी आत्मा बेचैन रहती थी। पीहर में उन्हें अपनी पूरबी भाषा, मनपसंद खान-पान और मन की बात समझने वाले मिलते थे — वही उनका असली घर था।

प्रश्न 3

इफ़्फ़न की दादी अपने बेटे की शादी में गाने-बजाने की इच्छा पूरी क्यों नहीं कर पाईं?

हल

इफ़्फ़न के दादा बहुत प्रसिद्ध मौलवी थे। मौलवी के घर में गाना-बजाना वर्जित माना जाता था।
दादी का मन बेटे की शादी में गाने-बजाने के लिए फड़का, परंतु मौलवी के घर में यह संभव नहीं था।
लेखक लिखता है — 'जब बेटे की शादी के दिन आए तो गाने-बजाने के लिए उनका दिल फड़का परंतु मौलवी के घर गाना-बजाना भला कैसे हो सकता था! बेचारी दिल मसोसकर रह गईं।'

उत्तर: इफ़्फ़न के दादा प्रसिद्ध मौलवी थे और मौलवी के घर में गाना-बजाना वर्जित था। इसलिए दादी मन मसोसकर रह गईं और अपनी इच्छा पूरी न कर पाईं।

प्रश्न 4

'अम्मी' शब्द पर टोपी के घरवालों की क्या प्रतिक्रिया हुई?

हल

टोपी ने एक दिन खाने की मेज पर रामदुलारी (अपनी माँ) से कहा — 'अम्मी, जरा बैगन का भुरता।'
यह शब्द सुनते ही मेज पर सभी के हाथ रुक गए और सबकी आँखें टोपी के चेहरे पर जम गईं।
सुभद्रादेवी (दादी) ने पूछा — 'ये लफ़्ज़ तुमने कहाँ सीखा?' और फिर 'ये अम्मी कहना तुमको किसने सिखाया है?' कहकर डाँटा।
जब पता चला कि यह शब्द इफ़्फ़न से सीखा है, तो रामदुलारी की आत्मा गनगना गई — 'तैं कउनो मियाँ के लइका से दोस्ती कर लिहले बाय का रे?'
सुभद्रादेवी रामदुलारी पर बरस पड़ीं और रामदुलारी ने टोपी को खूब मारा।
इस घटना से स्पष्ट है कि घर में साम्प्रदायिक संकीर्णता थी — उर्दू/मुस्लिम शब्द को भी सहन नहीं किया गया।

उत्तर: 'अम्मी' शब्द सुनते ही सबके हाथ रुक गए। दादी सुभद्रादेवी ने यह शब्द कहाँ से सीखा — पूछा, और रामदुलारी ने टोपी को मारा। घरवालों ने इसे मुस्लिम दोस्ती का परिणाम मानकर सख्त नाराजगी जताई।

प्रश्न 5

दस अक्तूबर सन् पैंतालीस का दिन टोपी के जीवन में क्या महत्त्व रखता है?

हल

दस अक्तूबर सन् पैंतालीस को इफ़्फ़न के पिता की बदली मुरादाबाद हो गई और वे वहाँ चले गए।
इफ़्फ़न की दादी के देहांत के थोड़े ही दिनों बाद यह तबादला हुआ था। दोनों घटनाओं ने मिलकर टोपी को पूरी तरह अकेला कर दिया।

इसी दिन टोपी ने कसम खाई — 'अब वह किसी ऐसे लड़के से दोस्ती नहीं करेगा जिसका बाप ऐसी नौकरी करता हो जिसमें बदली होती रहती है।'

नए कलेक्टर ठाकुर हरिनाम सिंह के तीनों बेटों से टोपी की दोस्ती न हो सकी — वे या तो उम्र में बड़े-छोटे थे या केवल अंग्रेजी बोलते थे।

इस प्रकार यह तारीख टोपी के जीवन में गहरे एकाकीपन का आरंभ बिंदु बन गई।

उत्तर: दस अक्तूबर सन् पैंतालीस को इफ़्फ़न का परिवार मुरादाबाद चला गया। इससे टोपी का सबसे प्रिय मित्र छूट गया और उसके जीवन में गहरा एकाकीपन आ गया। यही कारण है कि टोपी के आत्म-इतिहास में इस तारीख का विशेष महत्त्व है।

प्रश्न 6

टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात क्यों कही?

हल

टोपी की अपनी दादी सुभद्रादेवी उससे प्यार नहीं करती थीं, बल्कि उसे डाँटती-मारती थीं।

इफ़्फ़न की दादी ने टोपी को वह स्नेह दिया जो उसे कभी नहीं मिला था — वे उससे पूरबी भाषा में बात करतीं, उसे कहानियाँ सुनातीं और उसकी रक्षा करतीं।

टोपी ने कहा — 'अय्यसा ना हो सकता का की हम लोग दादी बदल लें, तोहरी दादी हमरे घर आ जाएँ अउर हमरी तोहरे घर चली जाएँ।'

उसने यह भी कहा — 'हमरी दादी त बोलियो तूँहीं लोगन को बो-ल-थीं' — अर्थात उसकी दादी इफ़्फ़न के घर की भाषा जैसी ही बोलती हैं, इसलिए वहाँ ठीक रहेंगी।

यह बात टोपी की गहरी भावनात्मक वेदना और इफ़्फ़न की दादी से अत्यधिक लगाव को दर्शाती है।

उत्तर: टोपी की अपनी दादी उससे प्यार नहीं करती थीं, जबकि इफ़्फ़न की दादी ने उसे माँ जैसा स्नेह दिया। इसीलिए टोपी ने दादी बदलने की बात कही — वह इफ़्फ़न की दादी को अपना मानता था।

प्रश्न 7

पूरे घर में इफ़्फ़न को अपनी दादी से ही विशेष स्नेह क्यों था?

हल

इफ़्फ़न को अपने परिवार के सभी सदस्यों से प्यार था, परंतु दादी से विशेष स्नेह था।

अम्मी कभी-कभार डाँट मार लेती थीं, बाजी (बड़ी बहन) का भी यही हाल था, अब्बू घर को कचहरी समझकर फैसला सुनाने लगते थे, और छोटी बहन नुजहत उसकी कापियों पर तसवीरें बनाती थी।

केवल दादी ही ऐसी थीं जिन्होंने कभी उसका दिल नहीं दुखाया।

दादी रात को उसे बहराम डाकू, अनार परी, बारह बुर्ज, अमीर हमजा, गुलबकावली, हातिमताई, पंच फुल्ला रानी जैसी मनोरम कहानियाँ सुनाती थीं।

दादी उसे निःशर्त प्यार देती थीं — इसीलिए उनसे विशेष स्नेह था।

उत्तर: घर में अम्मी, बाजी, अब्बू सभी कभी-कभार डाँटते-टोकते थे, पर दादी ने कभी उसका दिल नहीं दुखाया। वे रात को उसे रोचक कहानियाँ सुनाती थीं और निःशर्त प्यार देती थीं — इसीलिए इफ़्फ़न को दादी से विशेष स्नेह था।

प्रश्न 8

इफ़्फ़न की दादी के देहांत के बाद टोपी को उसका घर खाली-सा क्यों लगा?

हल

इफ़्फ़न की दादी ही टोपी के लिए उस घर की आत्मा थीं।

टोपी को दादी का नाम तक नहीं मालूम था, उसने उनके हाथ की कोई चीज कभी नहीं खाई थी, फिर भी दोनों के बीच एक अनकहा, गहरा रिश्ता था।

लेखक लिखता है — 'दोनों अलग-अलग अधूरे थे। एक ने दूसरे को पूरा कर दिया था। दोनों प्यासे थे। एक ने दूसरे की प्यास बुझा दी थी। दोनों अपने घरों में अजनबी और भरे घर में अकेले थे। दोनों ने एक-दूसरे का अकेलापन मिटा दिया था। एक बहत्तर बरस की थी और दूसरा आठ साल का।'

जब दादी नहीं रहीं, तो भरे-पूरे घर में भी वह जुड़ाव गायब हो गया — इसीलिए घर खाली-सा लगा।

उत्तर: इफ़्फ़न की दादी ही टोपी के लिए उस घर की आत्मा थीं। वे दोनों एक-दूसरे का अकेलापन मिटाते थे — एक बहत्तर बरस की और दूसरा आठ साल का। दादी के जाने से वह भावनात्मक जुड़ाव खत्म हो गया, इसलिए घर खाली-सा लगा।

प्रश्न 9

टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मजहब और जाति के थे पर एक अनजान अटूट रिश्ते से बँधे थे। इस कथन के आलोक में अपने विचार लिखिए।

हल

टोपी हिंदू परिवार का लड़का था और इफ़्फ़न की दादी एक मुस्लिम मौलवी की बहू थीं — धर्म, जाति, उम्र सब अलग-अलग।

फिर भी दोनों के बीच एक अटूट भावनात्मक रिश्ता था। इसका कारण था — दोनों का एकाकीपन और एक-दूसरे से मिला अपनापन।

दादी पूरबी भाषा बोलती थीं जो टोपी को प्रिय लगी। टोपी का घर उसे परायापन देता था — इफ़्फ़न की दादी ने उसे 'माँ जैसा' स्नेह दिया।

प्रेम किसी धर्म, जाति या उम्र की सीमा नहीं मानता। यह कहानी यही संदेश देती है कि इंसानी रिश्ते मजहब से बड़े होते हैं।

यह रिश्ता सांप्रदायिक सोच को चुनौती देता है — जहाँ टोपी के घर में 'अम्मी' शब्द बोलने पर प्रतिबंध था, वहीं दादी और टोपी का रिश्ता उन सब दीवारों को तोड़ता था।

उत्तर: टोपी और इफ़्फ़न की दादी के बीच का रिश्ता सिद्ध करता है कि सच्चा प्रेम धर्म, जाति और उम्र की सीमाएँ नहीं मानता। दोनों के मन में एकाकीपन था — एक ने दूसरे का अकेलापन मिटाया। यह कहानी बताती है कि इंसानी संबंध मजहबी दीवारों से कहीं बड़े होते हैं।

प्रश्न 10

टोपी नवीं कक्षा में दो बार फ़ेल हो गया। (क) जहीन होने के बावजूद भी कक्षा में दो बार फ़ेल होने के क्या कारण थे?

हल

टोपी काफी तेज (जहीन) था, परंतु घर का वातावरण पढ़ाई के लिए अनुकूल नहीं था।
पहली बार फ़ेल होने का कारण — जब वह पढ़ने बैठता तो मुन्नी बाबू को कोई-न-कोई काम निकल आता, रामदुलारी उससे काम करवातीं, और भैरव उसकी कापियों के हवाई जहाज उड़ा देता था।
दूसरी बार फ़ेल होने का कारण — उस साल उसे टाइफाइड हो गया।
तीसरे साल (सन् बावन में) डॉक्टर भृगु नारायण चुनाव में खड़े हो गए — घर में पढ़ाई का माहौल बिल्कुल खत्म हो गया। उनकी जमानत जब्त होने के बाद जब थोड़ी शांति आई, तब इम्तहान सिर पर था।
इस प्रकार घर की उपेक्षा, बीमारी और राजनीतिक उठापटक — तीनों ने मिलकर उसकी पढ़ाई बर्बाद की।

उत्तर: टोपी के फ़ेल होने के कारण — (1) घर में पढ़ने नहीं दिया जाता था (मुन्नी बाबू के काम, रामदुलारी की फरमाइशें, भैरव की शरारतें), (2) दूसरे साल टाइफाइड हो गया, (3) तीसरे साल घर में चुनावी माहौल रहा। बुद्धि होते हुए भी अनुकूल वातावरण न मिलने से वह फ़ेल हुआ।

प्रश्न 10

टोपी नवीं कक्षा में दो बार फ़ेल हो गया। (ख) एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठने से टोपी को किन भावात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

हल

सबसे पहले — उसके पुराने मित्र आगे निकल गए और वह पीछे रह गया। अपने साथियों के बिना उसे कक्षा में बैठना अजीब लगता था।
मास्टरों ने उसका नोटिस लेना बंद कर दिया। जवाब देने के लिए हाथ उठाता तो कोई नहीं पूछता। एक बार अंग्रेजी मास्टर ने व्यंग्य से कहा — 'तुम्हें तो सारे जवाब जबानी याद हो गए होंगे — तुमसे पारसाल पूछ लूँगा।' सारी कक्षा हँस पड़ी — यह गहरा अपमान था।
पीछे वालों के साथ बैठना भी कठिन था — उनके बीच वह 'बूढ़ा' दिखाई देता था।
अबदुल वहीद (मॉनीटर) ने भी उसे व्यंग्य किया — 'हम लोगन में का घुसता है।'
वह घर और स्कूल — दोनों जगह एकदम अकेला हो गया था। यह भावात्मक एकाकीपन उसके लिए सबसे बड़ी चुनौती थी।

उत्तर: टोपी को भावात्मक चुनौतियाँ — (1) पुराने मित्रों का साथ छूटना, (2) मास्टरों की उपेक्षा और कक्षा में सार्वजनिक अपमान, (3) नए साथियों के बीच 'बूढ़े' जैसा महसूस करना, (4) दोहरा एकाकीपन — घर और स्कूल दोनों जगह। इन सबने उसे भीतर से तोड़ दिया।

प्रश्न 10

टोपी नवीं कक्षा में दो बार फ़ेल हो गया। (ग) टोपी की भावात्मक परेशानियों को मद्देनजर रखते हुए शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक बदलाव सुझाइए।

हल

शिक्षक को छात्र की परिस्थितियों को समझना चाहिए — व्यंग्य से नहीं, सहानुभूति से उसकी मदद करनी चाहिए।
जो छात्र पिछड़ जाएँ, उनके लिए अतिरिक्त सहायता और विशेष ध्यान देने की व्यवस्था होनी चाहिए।
कक्षा में किसी भी छात्र का सार्वजनिक अपमान नहीं होना चाहिए। यह उसके आत्मसम्मान को कुचलता है।
परीक्षा में बीमारी या पारिवारिक समस्याओं जैसे कारणों से फ़ेल हुए छात्रों के लिए पुनः अवसर या विशेष परीक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए।
विद्यालय में परामर्श (काउंसलिंग) की व्यवस्था हो ताकि भावात्मक रूप से पीड़ित छात्र अपनी बात कह सकें।
शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा पास कराना नहीं, बल्कि बच्चे के समग्र विकास — भावनात्मक, बौद्धिक और सामाजिक — को बढ़ावा देना होना चाहिए।

उत्तर: शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक बदलाव: शिक्षकों को सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार, सार्वजनिक अपमान पर रोक, विशेष परिस्थितियों में पुनः परीक्षा का अवसर, स्कूल में काउंसलिंग सेवा, और समग्र विकास पर बल — केवल अंकों पर नहीं।

प्रश्न 11

इफ़्फ़न की दादी के मायके का घर कस्टोडियन में क्यों चला गया?

हल

इफ़्फ़न की दादी के मायके का घर 'कच्ची हवेली' के नाम से जाना जाता था — मिट्टी की बनी यह हवेली उन्हें बहुत प्रिय थी।
मरते वक्त उन्होंने कहा — 'हमरे घर भेज दिहो', परंतु उस वक्त उन्हें याद नहीं रहा कि घरवाले कराची जा चुके हैं।
विभाजन (1947) के बाद उनके मायके के परिजन कराची चले गए थे। जो लोग पाकिस्तान चले गए, उनकी भारत में छोड़ी गई संपत्ति 'Custodian' (सरकारी संरक्षक) के अधीन हो जाती थी।
इसीलिए वह घर कस्टोडियन का हो गया — उस पर न दादी का हक रहा, न उनके परिजनों का।

उत्तर: 1947 के विभाजन के बाद इफ़्फ़न की दादी के मायके के परिजन कराची (पाकिस्तान) चले गए। विभाजन के बाद पाकिस्तान गए लोगों की भारत में छोड़ी संपत्ति Custodian (सरकारी संरक्षण) में चली जाती थी — इसीलिए 'कच्ची हवेली' कस्टोडियन की हो गई।